पल्लव कालीन इतिहास के स्रोत

पल्लव इतिहास के अध्ययन के लिये हमें साहित्य, विदेशी विवरण तथा पुरातत्व तीनों से उपयोगी सामग्रियाँ प्राप्त होती है।

साहित्य -

पल्लव काल में संस्कृत तथा तमिल भाषा में अनेक ग्रंथों की रचना की गई। संस्कृत ग्रंथों में अवन्तिसुन्दरीकथा तथा मतविलासप्रहसन का प्रमुख रूप से उल्लेख किया जा सकता है। सोड्ढल कृत अवंतिसुन्दरीकथा से पल्लव नरेश सिंहविष्णु तथा उसके समकालिकों के समय की राजनीतिक सांस्कृतिक घटनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इसमें मामल्लपुरम् तथा वहाँ स्थित अनन्तशायी विष्णु की मूर्ति का भी उल्लेख हुआ है। मतविलासप्रहसन की रचना पल्लव नरेश महेन्द्रवर्मन प्रथम ने किया था। इसमें कापालिकों तथा भिक्षुओं पर व्यंग कसा गया है तथा साथ ही साथ पुलिस एवं न्याय व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचारों की ओर भी परोक्षतः संकेत हुआ है।

तमिल ग्रंथों में नंदिकुलम्बकम् उल्लेखनीय है जिसके अध्ययन से हम नन्दिवर्मन तृतीय के जीवनवृत्त तथा उपलब्धियों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। साथ ही पल्लवकालीन कांचीनगर के समाज तथा संस्कृति का विवरण भी इससे प्राप्त होता है।

पल्लव इतिहास के साधनों के रूप में जैन ग्रंथ लोकविभंग तथा बौद्ध ग्रंथ महावंश का भी महत्व है। प्रथम से हमें नंदिवर्मन के राज्य तथा शासन का ज्ञान होता है जबकि दूसरे ग्रंथ से प्रारंभिक पल्लव शासकों की तिथि निर्धारित करने में मदद मिलती है।

विदेशी विवरण

इसके अन्तर्गत चीनी यात्री हुएनसांग के विवरण का उल्लेख किया जा सकता है। वह ६४० ई में पल्लवों की राजधानी कांची की यात्रा पर गया था।

इस समय वहाँ नरसिंहवर्मन प्रथम शासन करता था। वह उसे महान् राजा बताता है। उसके विवरण से पता चलता है कि कांची धर्मपाल बोधिसत्व की जन्मभूमि थी। ह्वेनसांग कांची एवं महाबलीपुरम की समृद्धि का चित्रण करता है। उसके अनुसार कांची में अनेक बौद्ध विहार थे जिनमें बहुसंख्यक भिक्षु निवास करते थे।

पुरातत्व

पल्लव इतिहास के सबसे प्रामाणिक स्रोत (साधन) अभिलेख हैं। इनमें वंशावली तथा तिथियाँ भी अंकित हैं। लेख मंदिरों, ताम्रपत्रों, तथा मुद्राओं पर उत्कीर्ण हैं तथा इनमें प्राकृत तथा संस्कृत दोनों भाषाओं का प्रयोग मिलता है। ये इस वंश के शासकों की राजनैतिक तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हैं। पल्लव वंश के प्रारंभिक इतिहास के लिये शिवस्कंदवर्मन के मैडवोलु तथा हीरहडगल्ली के लेख उपयोगी हैं। ये प्राकृत भाषा में हैं। इनका काल सामान्यतौर पर 250 ई० से लेकर 350 ई० तक माना जाता है। संस्कृत के लेख 350 ई० से 600 ई० के बीच के हैं। इनमें सबसे प्राचीन लेख कुमार विष्णु द्वितीय का चेन्दलूर दानपत्र तथा नन्दिवर्मन का उदयेन्दिरम दानपत्र है। सिंहविष्णु तथा उसके बाद के शासकों के इतिहास के लिये कशाकुडी दानपत्र, कुरम दानपत्र,
मंडगपट्ट लेख, गद्वाल दानपत्र,
वेलूरपाल्यम अभिलेख, उदयेन्दिरम दानपत्र,
बादूर अभिलेख, पल्लवरम अभिलेख,
पनमलै अभिलेख, मयलूर अभिलेख,
वैकुण्ठपेरुमल अभिलेख आदि महत्वपूर्ण हैं।

इसके साथ ही समकालीन चालुक्य तथा राष्ट्रकूट लेखों से भी पल्लव इतिहास पर प्रकाश पड़ता।

उपरोक्त स्रोतों की सहायता से पल्लव वंश का इतिहास हम ज्ञात पाते हैं।